Vindhyan Bloom

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

A Referred Peer Review Research Journal

Vindhyan Bloom

ISSN-2319-8478 Vol-15 Issue-3, June 2026

Manuscript Information	Research Paper	Paper No. VBRP-13

घासभूमि पारिस्थितिकी तंत्र: संरचना, वितरण, महत्व एवं संरक्षण दृष्टिकोण

डी.एम. कुमावत, *प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, पर्यावरण अध्ययनशाला, सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)*

मनीष कुमार शर्मा, *सहायक प्राध्यापक (वनस्पतिशास्त्र), प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस,शासकीय माधव महाविद्यालय, उज्जैन(म.प्र.)*

डॉ. संतोष कुमार शर्मा, *सहायक प्राध्यापक (वनस्पतिशास्त्र), प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस राजीव गाँधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मंदसौर (म.प्र.)*

कृष्णपाल सिंह सिसोदिया, *शोध छात्र, पर्यावरण अध्ययनशाला, सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)*

प्रस्तावना

प्रकृति द्वारा प्रदत्त प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष संसाधनों में घास के मैदान एक अत्यंत महत्वपूर्ण पारिस्थितिक घटक हैं, जिन्हें पृथ्वी के लिए एक अमूल्य वरदान माना जा सकता है। घास के मैदान (Grasslands) पृथ्वी की सतह पर पाए जाने वाले वे विस्तृत भू-भाग हैं, जहाँ मुख्यतः घास एवं अन्य लघु शाकीय पौधों की प्रधानता होती है। ये पारिस्थितिक तंत्र सामान्यतः उन क्षेत्रों में विकसित होते हैं जहाँ वार्षिक वर्षा सीमित होती है। वैज्ञानिक एवं अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार, यूनेस्को (UNESCO) द्वारा घास के मैदानों को ऐसे क्षेत्रों के रूप में परिभाषित किया गया है, जहाँ वृक्षों का आच्छादन (Tree Canopy Cover) 10 प्रतिशत से कम होता है। वैश्विक स्तर पर पृथ्वी की लगभग 25 प्रतिशत से 40 प्रतिशत भूमि (विभिन्न वर्गीकरणों के अनुसार) घास के मैदानों द्वारा आच्छादित है। यह पारिस्थितिकी तंत्र न केवल विविध जैव-विविधता को आश्रय प्रदान करता है, बल्कि मानव सभ्यता के विकास, कृषि के उद्भव तथा वैश्विक कार्बन चक्र के संतुलन एवं स्थिरीकरण में भी इसकी केंद्रीय भूमिका रही है। प्रस्तुत लेख में वैश्विक परिदृश्य से लेकर भारत तथा विशेष रूप से मध्य प्रदेश (उज्जैन) के संदर्भ में घास के मैदानों की स्थिति, उनके प्रकार, पारिस्थितिकीय महत्व एवं वर्तमान पर्यावरणीय चुनौतियों का एक समग्र एवं गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

विश्व के प्रमुख घास के मैदानों को वैश्विक जलवायु, अक्षांशीय स्थिति एवं वर्षा के वितरण प्रतिरूप के आधार पर व्यापक रूप

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

से दो प्रमुख वर्गों में विभाजित किया जाता है:

1. उष्णकटिबंधीय घास के मैदान (Tropical Grasslands):ये घास के मैदान भूमध्य रेखा के उत्तर एवं दक्षिण स्थित उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में विकसित होते हैं। यहाँ की जलवायु सामान्यतः उष्ण होती है तथा वर्ष भर उच्च तापमान की स्थिति बनी रहती है। वर्ष के दौरान एक स्पष्ट वर्षा ऋतु होती है, जिसके पश्चात दीर्घकालीन शुष्क एवं अपेक्षाकृत अधिक गर्म अवधि का प्रभावी चरण पाया जाता है।

- **सवाना (Savanna):**अफ्रीका महाद्वीप का सवाना क्षेत्र इस श्रेणी का सर्वाधिक प्रतिनिधि उदाहरण है। इन घास के मैदानों में लंबी एवं सघन घास के साथ-साथ बबूल और बाओबाब जैसे वृक्ष विरलता में पाए जाते हैं। यह क्षेत्र विश्व के प्रमुख शाकाहारी एवं मांसाहारी जीवों—जैसे जिराफ, हाथी, शेर, चीता एवं ज़ेबरा—की समृद्ध जैव विविधता के लिए प्रसिद्ध है।

- **लानोस एवं कैंपोस (Llanos & Campos):**दक्षिण अमेरिका के वेनेजुएला (लानोस) तथा ब्राज़ील (कैंपोस) में विस्तृत ये उष्णकटिबंधीय घास के मैदान अपनी विशिष्ट जैव विविधता एवं मौसमी जलवायु चक्र के लिए जाने जाते हैं।

2. शीतोष्ण घास के मैदान (Temperate Grasslands):ये घास के मैदान मध्य अक्षांशीय क्षेत्रों तथा महाद्वीपों के आंतरिक भागों में पाए जाते हैं, जैसे—मध्य संयुक्त राज्य अमेरिका एवं कनाडा, अर्जेंटीना एवं उरुग्वे, यूक्रेन एवं दक्षिणी रूस, दक्षिण अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया तथा न्यूज़ीलैंड के कुछ क्षेत्र। इन क्षेत्रों में ग्रीष्म ऋतु अपेक्षाकृत उष्ण एवं शीत ऋतु अत्यंत ठंडी होती है, साथ ही वृक्षों का लगभग अभाव पाया जाता है तथा घास की ऊँचाई उष्णकटिबंधीय घास के मैदानों की तुलना में कम होती है।इन घास के मैदानों को विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है:

- **प्रेयरी (Prairie):**उत्तरी अमेरिका
- **स्टेपी (Steppe):**यूरेशिया (एशिया एवं यूरोप)
- **पम्पास (Pampas):**दक्षिण अमेरिका (मुख्यतः अर्जेंटीना एवं उरुग्वे)
- **वेल्ड (Veld):**दक्षिण अफ्रीका
- **डाउंस (Downs):**ऑस्ट्रेलिया
- **कैंटरबरी (Canterbury Grasslands):**न्यूज़ीलैंड

भारत के प्रमुख घास मैदान

भारत में घास के मैदानों की भौगोलिक स्थिति, संरचना तथा जीव-जंतुओं की उपस्थिति अन्य महाद्वीपीय देशों की तुलना में भिन्न एवं अधिक जटिल है। यह भिन्नता मुख्यतः मानसूनी जलवायु की विशिष्ट प्रकृति, स्थलाकृति की विविधता तथा तापांतर के व्यापक उतार-चढ़ाव के कारण उत्पन्न होती है। देश के कुल

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 18 से 24 प्रतिशत भाग घास के मैदानों द्वारा आच्छादित है, जो इसे उच्च स्तर की जैव विविधता से समृद्ध बनाता है।

चैम्पियन एवं सेठ (1968) के वर्गीकरण के अनुसार, भारतीय घास के मैदानों को निम्न प्रमुख पारिस्थितिकीय क्षेत्रों में विभाजित किया गया है:

1. **हिमालयी अल्प्स और बुग्याल (Alpine Meadows / *Bugyals*):**ये उच्च पर्वतीय क्षेत्रीय घास के मैदान हैं, जो सामान्यतः 3000 मीटर से अधिक ऊँचाई वाले हिमालयी क्षेत्रों में पाए जाते हैं। इनमें उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर तथा सिक्किम के पर्वतीय भाग शामिल हैं। उत्तराखंड में इन्हें 'बुग्याल' या 'पयार' तथा कश्मीर में 'मर्ग' (जैसे गुलमर्ग, सोनमर्ग) के नाम से जाना जाता है।

2. **तराई के आर्द्र घास के मैदान:**यह पारिस्थितिक क्षेत्र हिमालय की तलहटी में भारत-नेपाल सीमा के निकटवर्ती भागों में विकसित होता है, जिसमें उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश (विशेषतः दुधवा राष्ट्रीय उद्यान), बिहार तथा असम (जैसे काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान) के क्षेत्र सम्मिलित हैं। यहाँ अत्यंत ऊँची, लगभग 4–5 मीटर तक विकसित होने वाली 'हाथी घास' प्रमुख रूप से पाई जाती है, जो इस क्षेत्र की विशिष्ट पारिस्थितिक संरचना का निर्माण करती है। यह आवास एक सींग वाले गैंडे, दलदली हिरण (बारहसिंघा) तथा बंगाल टाइगर जैसे प्रमुख वन्यजीवों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण आश्रय स्थल प्रदान करता है।

3. **बन्नी और अर्ध-शुष्क घास के मैदान:**भारत के पश्चिमी भाग, विशेषतः गुजरात के कच्छ क्षेत्र में स्थित बन्नी घास का मैदान एशिया के सबसे विस्तृत एवं समृद्ध प्राकृतिक घास के मैदानों में से एक माना जाता है। इसके अतिरिक्त राजस्थान के थार मरुस्थल के अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में भी घास के मैदानों का विकास पाया जाता है। ये क्षेत्र अत्यंत संकटग्रस्त प्रजाति ग्रेट इंडियन बस्टर्ड (गोडावण) के अंतिम प्राकृतिक आवासों के रूप में महत्वपूर्ण हैं। इस पारिस्थितिक तंत्र की पहचान प्रमुखतः दो बारहमासी घास प्रजातियों—*Sehima nervosum*तथा*Dicanthium annulatum*—की उपस्थिति से होती है।

4. **शोला घास के मैदान:**दक्षिण भारत के पश्चिमी घाट में स्थित नीलगिरि, अन्नामलाई एवं पलनी पहाड़ियों में एक विशिष्ट एवं जटिल पारिस्थितिक तंत्र पाया जाता है, जिसे शोला-घास का मैदान पारिस्थितिकी तंत्र कहा जाता है। इसकी संरचना अत्यंत अनूठी है,

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

जहाँ पहाड़ी ढलानों पर सघन बौने वनों (शोला वन) के साथ-साथ उनके मध्य विस्तृत घास के मैदानों का सह-अस्तित्व देखा जाता है, जो इसे एक उच्च जैव विविधता वाला संवेदनशील पारिस्थितिक क्षेत्र बनाता है।

मध्यप्रदेश के घास के मैदान

मध्यप्रदेश का भौगोलिक परिदृश्य मुख्यतः वनों, पठारों तथा नदी घाटियों से समृद्ध है। यहाँ शुद्ध एवं विस्तृत घास के मैदानों का अभाव पाया जाता है; इसके स्थान पर सवाना प्रकार के खुले वन एवं घास-प्रधान क्षेत्र पाए जाते हैं। ये पारिस्थितिक क्षेत्र प्रायः राष्ट्रीय उद्यानों एवं वन्यजीव अभयारण्यों के भीतर विकसित होकर जैव विविधता संरक्षण तथा वन्यजीवों के आवास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यहाँ प्रमुख वनस्पतियों मेंभेलवा (*Heteropogon*), बबूल (*Acacia*), पलाश (ढाक), झाड़बेरी तथा सलई जैसी प्रजातियाँ शामिल हैं, जो चराई हेतु एक सुदृढ़ पारिस्थितिक आधार प्रदान करते हैं। मध्यप्रदेश के प्रमुख घास के मैदानों का वर्णन निम्नानुसार है –

1. **कान्हा राष्ट्रीय उद्यान के घास के मैदान (Meadows of Kanha):**कान्हा टाइगर रिज़र्व अपने विस्तृत घास के मैदानों, जिन्हें स्थानीय रूप से "बंजर" या "ददर" कहा जाता है, के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है। यह क्षेत्र बारहसिंगा (Hard-ground Swamp Deer) का प्रमुख तथा लगभग एकमात्र प्राकृतिक आवास माना जाता है। यहाँ*Themeda triandra* (स्थानीय रूप से "उल्टी घास") तथा*Saccharum*जैसी घास प्रजातियाँ प्रचुर मात्रा में पाई जाती हैं। यह पारिस्थितिकी तंत्र शाकाहारी एवं परभक्षी दोनों प्रकार के जीवों के लिए संतुलित एवं अनुकूल आवासीय सुविधाएं प्रदान करता है।

2. **कूनो राष्ट्रीय उद्यान के घास के मैदान:**श्योपुर जिले में स्थित कूनो राष्ट्रीय उद्यान अर्ध-शुष्क घास के मैदानों तथा कटीली झाड़ियों वाले वनों (Scrub forests) का मिश्रित पारिस्थितिक क्षेत्र है। यह क्षेत्र बड़े स्तनधारियों के पुनर्स्थापन एवं संरक्षण के लिए उपयुक्त पारिस्थितिक परिस्थितियाँ उपलब्ध कराता है।

3. **बांधवगढ़ और पेंच के घास के मैदान:**बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान (उमरिया) विंध्य पर्वत श्रृंखला की घाटियों में स्थित है, जहाँ दलदली एवं खुले घास के मैदान पाए जाते हैं, जिन्हें स्थानीय रूप से "बहरा" कहा जाता है। दूसरी ओर, पेंच राष्ट्रीय उद्यान (सिवनी एवं छिंदवाड़ा) में विस्तृत खुले घास के मैदान हैं, जो बाघ सहित अनेक वन्यजीवों के महत्वपूर्ण आवास हैं।

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

4. **माधव राष्ट्रीय उद्यान और गांधी सागर अभयारण्य:**शिवपुरी जिले में स्थित माधव राष्ट्रीय उद्यान खुले सवाना-प्रकार के घास के मैदानों के लिए जाना जाता है, जहाँ सलाई एवं खैर जैसे वृक्षों के मध्य घास की सघन परतें विकसित होती हैं। वहीं, मंदसौर जिले में स्थित गांधी सागर वन्यजीव अभयारण्य चंबल नदी के तटीय एवं पठारी क्षेत्रों में विस्तृत घास के मैदानों की उपस्थिति के लिए उल्लेखनीय है।

उज्जैन जिले के घास के मैदान

उज्जैन जिला अपेक्षाकृत खुले तथा सघन वनों से रहित भू-भाग के रूप में पहचाना जाता है। यह मालवा पठार का भाग है, जहाँ अर्ध-शुष्क एवं उष्णकटिबंधीय जलवायु की स्थितियाँ पाई जाती हैं। कम से मध्यम वर्षा तथा पथरीली स्थलाकृति के कारण यहाँ घास के मैदान सीमित एवं खंडित रूप में विकसित होते हैं।वन विभाग के अनुसार उज्जैन एवं तराना तहसीलों में कुछ घास-प्रधान क्षेत्रों को "कम्पार्टमेंट" एवं "बीड़" के रूप में वर्गीकृत किया गया है। इन क्षेत्रों में बबूल, पलाश तथा विभिन्न झाड़ियों के मध्य घास की परतें विकसित होती हैं। प्रमुख घास प्रजातियों में निम्नलिखित सम्मिलित हैं—

- *Dicanthium annulatum* (स्थानीय: करड़ घास)
- *Iseilema* (मूशल घास)
- *Sehima nervosum* (मालवा की शुष्क ढलानों की प्रमुख चारा घास)

वन विभाग के अभिलेखों के अनुसार उज्जैन क्षेत्र में लगभग 27 घास के मैदान चिन्हित किए गए हैं, जिनमें लसूडिया, बगवाड़ा, गुराड़िया, बोरखेड़ी, जंबुरिया, केसूनी तथा नोलखी प्रमुख हैं**(चित्र 1)**।इन घास के मैदानों का महत्व मुख्यतः पशुपालन को आधार प्रदान करने, मृदा अपरदन को प्रभावी रूप से नियंत्रित करने तथा स्थानीय पारिस्थितिकीय संतुलन को स्थिर बनाए रखने में निहित है।





Vindhyan Bloom
ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026



चित्र 1:उज्जैन जिले के घास क्षेत्रों का क्षेत्रीय सर्वेक्षण एवं फील्ड आधारित दस्तावेजीकरण

घास के मैदानों का पारिस्थितिकीय और आर्थिक महत्व

घास के मैदानों को प्रायः बंजर भूमि के समकक्ष समझ लिया जाता है, किंतु जैव विविधता एवं पारिस्थितिक संरक्षण की दृष्टि से यह धारणा एक गंभीर वैज्ञानिक भ्रांति है। वास्तव में, घास के मैदानों का पर्यावरण एवं मानव जीवन पर व्यापक प्रभाव एवं महत्व निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

1. *जैव विविधता संरक्षण:*घास के मैदान पृथ्वी के लगभग 20 प्रतिशत भू-भाग को आच्छादित करते हैं और विश्व के सबसे समृद्ध एवं महत्वपूर्ण पारिस्थितिक तंत्रों में से एक माने जाते हैं। जैव विविधता संरक्षण की दृष्टि से इनका विशेष महत्व है, क्योंकि ये अनगिनत वन्यजीवों, पक्षियों, कीटों तथा सूक्ष्मजीवों को आवास एवं जीवन-समर्थन प्रदान करते हैं।

2. *भूमिगत कार्बन सिंक:*घास के मैदान अपने कुल कार्बन का लगभग 80 से 90 प्रतिशत भाग मिट्टी के भीतर, जड़ों एवं कार्बनिक पदार्थों के रूप में संचित करते हैं। यहाँ तक कि यदि सतही घास जल भी जाए, तो भी अधिकांश कार्बन मिट्टी में सुरक्षित बना रहता है। ये पारिस्थितिक तंत्र प्रति हेक्टेयर प्रति वर्ष लगभग 146 टन तक कार्बन अवशोषित करने की क्षमता रखते हैं, जिससे जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में महत्वपूर्ण योगदान मिलता है।

3. *जल चक्र एवं भूजल पुनर्भरण:*घासों की गहरी एवं आपस में गुंथी हुई जड़ें (अक्सर अपस्थानिक जड़ों के रूप में) एक सघन जाल जैसी संरचना बनाती हैं। मानसून के दौरान जब भारी वर्षा होती है, तो यह घास वर्षाजल के तीव्र सतही प्रवाह को रोकती है, जिससे जल का अधिकाधिक अवशोषण मिट्टी में हो पाता है। इससे भूजल स्तर में सुधार होता है तथा बाढ़ की तीव्रता को नियंत्रित करने के साथ-साथ नदियों के प्रवाह को वर्षभर

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

संतुलित बनाए रखने में सहायता मिलती है।

4. *कृषि आनुवंशिक संसाधनों का भंडार:*यह सर्वविदित है कि मानव आज जिन प्रमुख फसलों—गेहूं, मक्का, चावल, बाजरा और जौ—पर निर्भर है, वे सभी मूलतः घास परिवार (Poaceae) से ही संबंधित हैं और कभी स्वतंत्र रूप से घास के मैदानों में उगती थीं। वर्तमान समय में भी इन मैदानों में पाई जाने वाली जंगली घास प्रजातियों के आनुवंशिक संसाधनों का उपयोग उन्नत, रोग-प्रतिरोधी एवं अधिक उत्पादक फसल किस्मों के विकास में किया जाता है।

5. *मृदा अपरदन की रोकथाम:*घास की सघन जड़ प्रणाली मिट्टी के कणों को दृढ़ता से बांधकर रखती है, जिससे तेज हवा या जल प्रवाह के कारण ऊपरी उपजाऊ मृदा परत के बहाव को प्रभावी रूप से रोका जा सकता है।

6. *अर्थव्यवस्था का आधार:*भारत एक कृषि-प्रधान देश है, जहाँ करोड़ों लोगों की आजीविका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से घास के मैदानों पर निर्भर है। देश के विशाल पशुधन—गाय, भैंस, भेड़ एवं बकरी—के लिए पोषक एवं प्राकृतिक चारे का प्रमुख स्रोत इन्हीं घास के मैदानों से प्राप्त होता है।

घास के मैदानों का क्षरण

वर्तमान परिदृश्य में भारत के 1 प्रतिशत से भी कम घास के मैदान ही संरक्षित क्षेत्रों के अंतर्गत आते हैं। घास के मैदानों के क्षरण के प्रमुख कारणों में अत्यधिक चराई, जलवायु परिवर्तन, कृषि भूमि में परिवर्तन तथा वनों की कटाई शामिल हैं। इन प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप जैव विविधता में गंभीर ह्रास होता है तथा मृदा की उर्वरता एवं उत्पादकता भी निरंतर घटती जाती है।

1. ***अत्यधिक चराई:***सीमित क्षेत्र में क्षमता से अधिक पशुचारण होने पर घास उखड़ जाती है, जिससे मृदा की संरचना अस्थिर हो जाती है और मृदा अपरदन की प्रक्रिया तेज हो जाती है। अत्यधिक चराई के कारण मवेशियों के चलने से घास को फिर से उगने का पर्याप्त समय नहीं मिल पाता, जिससे पारिस्थितिक संतुलन बाधित होता है। दीर्घकाल में यह स्थिति मृदा को संपीड़ित कर कठोर बना देती है, जिससे जल-अवशोषण क्षमता निरंतर घटती जाती है; परिणामस्वरूप मरुस्थलीकरण की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है।

2. ***कृषि भूमि में परिवर्तन:***बढ़ती जनसंख्या एवं खाद्य आवश्यकताओं के दबाव के कारण प्राकृतिक घास के मैदानों को कृषि भूमि में परिवर्तित किया जा रहा है। इस

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

प्रक्रिया से भूमि की प्राकृतिक जैव विविधता नष्ट होती है तथा समय के साथ मृदा की गुणवत्ता में गिरावट आकर वह धीरे-धीरे बंजर होने लगती है।

3. ***जलवायु परिवर्तन:***वैश्विक तापमान में वृद्धि तथा वर्षा चक्र की अनियमितता (सूखा एवं बाढ़ की स्थितियाँ) के कारण घास के मैदानों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। परिणामस्वरूप कई क्षेत्र बढ़ते शुष्कता दबाव के कारण मरुस्थल में परिवर्तित हो रहे हैं।

4. ***शहरीकरण एवं औद्योगीकरण:***विकासात्मक गतिविधियों के विस्तार, विशेषकर नगरीकरण एवं औद्योगिक इकाइयों की स्थापना के लिए प्राकृतिक आवासों—विशेषकर घास के मैदानों—का बड़े पैमाने पर परिवर्तन किया जा रहा है जो पारिस्थितिक असंतुलन का एक प्रमुख कारण सिद्ध हो रहा है ।

5. ***विदेशी आक्रामक प्रजातियाँ:***'गाजर घास' (*Parthenium*) तथा 'लेंटाना' (*Lantana camara*) जैसी आक्रामक खरपतवार प्रजातियाँ, उचित प्रबंधन के अभाव में घास के मैदानों में तेजी से फैलती हैं। ये प्रजातियाँ घास की स्थानीय प्रजातियों के विकास को बाधित करती हैं और पारिस्थितिक संतुलन को अस्थिर कर देती हैं।

घास के मैदानों के संरक्षण के प्रमुख उपाय

घास के मैदानों का संरक्षण पारिस्थितिक तंत्र, जैव विविधता तथा जलवायु संतुलन को बनाए रखने हेतु आवश्यक है। इसके लिए निम्नलिखित उपाय प्रभावी हो सकते हैं:

- **जागरूकता:** राज्य, जिला एवं पंचायत स्तर पर घास के मैदानों के संरक्षण हेतु व्यापक जागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए।
- **फैंसिंग:** अतिक्रमण एवं अनियंत्रित पशु प्रवेश को रोकने के लिए घास के मैदानों के चारों ओर तारबंदी या वृक्ष-आधारित घेराबंदी की जानी चाहिए।
- **चराई नियंत्रण:** अतिचारण को नियंत्रित कर घास को पुनः वृद्धि हेतु पर्याप्त समय प्रदान किया जाना चाहिए।
- **भूमि-परिवर्तन पर रोक:** घास के मैदानों को कृषि भूमि या वनों में अनियंत्रित रूप से परिवर्तित होने से रोका जाना आवश्यक है, क्योंकि अनेक प्रजातियाँ इन आवासों पर पूर्णतः निर्भर होती हैं।
- **आक्रामक प्रजातियों का नियंत्रण:** विदेशी एवं अवांछित खरपतवारों का समय पर उन्मूलन किया जाना चाहिए ताकि स्थानीय घास प्रजातियाँ पुनः स्थापित हो सकें।
- **कानूनी संरक्षण:** चारागाह अभ्यारण्य एवं संरक्षित घासभूमि क्षेत्रों की स्थापना कर उन्हें विधिक संरक्षण प्रदान किया जाना चाहिए।

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

निष्कर्ष

घास के मैदान केवल प्राकृतिक परिदृश्य का एक घटक नहीं हैं, बल्कि वे पारिस्थितिक स्थिरता, जैव विविधता संरक्षण तथा मानव-पर्यावरण संबंधों के संतुलन के आधारभूत स्तंभ हैं। विकास की वर्तमान तीव्र प्रक्रिया में इन पारिस्थितिक तंत्रों को उपेक्षित कर "बंजर भूमि" के रूप में देखना एक गंभीर वैज्ञानिक एवं नीतिगत भूल है, जिसके दीर्घकालिक परिणाम पारिस्थितिक असंतुलन के रूप में सामने आते हैं। इसलिए आवश्यक है कि घास के मैदानों को एक सक्रिय पारिस्थितिक संसाधन के रूप में मान्यता दी जाए तथा इनके संरक्षण एवं पुनर्जीवन को विकास योजनाओं का अभिन्न हिस्सा बनाया जाए।स्थानीय स्तर पर प्रशासन, वन विभाग एवं पंचायतों के समन्वित प्रयासों के माध्यम से सामुदायिक चरागाहों का संरक्षण, आक्रामक प्रजातियों का नियंत्रण तथा देशी घास प्रजातियों का पुनर्स्थापन सुनिश्चित किया जाना चाहिए। साथ ही, इनके वैज्ञानिक प्रबंधन हेतु दीर्घकालिक नीतिगत ढांचा विकसित करना आवश्यक है, जिससे इन पारिस्थितिक तंत्रों की उत्पादकता, जैव विविधता एवं पारिस्थितिक सेवाएँ सतत रूप से संरक्षित रह सकें। इसी समग्र दृष्टिकोण के माध्यम से घास के मैदानों का दीर्घकालिक पारिस्थितिक संतुलन एवं स्थायित्व सुनिश्चित किया जा सकता है।

संदर्भ

Champion, H. G., & Seth, S. K. (1968). *A revised survey of the forest types of India*. Government of India Publications, New Delhi.